संवाद

शिक्षा और समाज एक-दूसरे पर निर्भर हैं। समाज परिवर्तनशील है और समाज में हो रहे परिवर्तन शिक्षा प्रणाली को प्रभावित करते हैं। सामाजिक परिवर्तनों के अनुसार शिक्षा का स्वरूप बदलता है और उसमें आए परिवर्तन सामाजिक और सांस्कृतिक संरचनाओं को प्रभावित करते हैं। वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य बच्चों को सिखाने की अपेक्षा बच्चों के सीखने के लिए सकारात्मक व रोचक परिवेश के सृजन पर बल देता है और संकेत करता है कि सभी बच्चों के सीखने की शैलियाँ व गति भिन्न-भिन्न हैं।

कला एकीकृत अधिगम सामूहिक एवं मज़ेदार तरीके से सीखने में मदद करता है। यह नई अवधारणा को समझने में मदद करता है, जो विद्यार्थियों और शिक्षकों के बीच संबंध बनाने में कारगर है। यह उदाहरणों और गतिविधियों, जैसे— कला, संगीत, नृत्य, थिएटर, साहित्य इत्यादि के माध्यम से सीखने को बढ़ावा देता है। कक्षा में बच्चों की बेहतर भागीदारी के लिए विभिन्न गतिविधियों को शामिल करना चाहिए, जैसे— कविता के माध्यम से सीखना-सिखाना, कला और खेल आधारित गतिविधियों के द्वारा सीखना-सिखाना आदि। इससे बच्चों का झुकाव सीखने पर होगा और वे प्रभावी तरीके से सीखेंगे। दिलचस्प और रचनात्मक कक्षा बच्चों को प्रश्न पूछकर सीखने के लिए प्रेरित करती है और सीखने की प्रक्रिया को सुदृढ़ बनाती है।

बच्चों के सीखने की प्रक्रिया को मज़बूत बनाने के लिए परियोजना और विश्लेषण प्रक्रिया को शामिल करने की आवश्यकता है। इससे बच्चे को स्वयं निर्णय लेने में मदद मिलेगी, उनकी क्षमताओं में वृद्धि होगी तथा वे नवीन और नए दृष्टिकोण के साथ सीखेंगे। खेलते समय बच्चे एक-दूसरे के सहयोग से सीखते हैं और एक-दूसरे के साथ संवाद करके उनकी शब्दावली विकसित होती है। शिक्षकों को पढ़ाई को रुचिकर बनाने के लिए इस तरह की योजनाएँ बनानी चाहिए, जिसमें वे कला, योग व खेल को शामिल कर सकें।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020, 3–6 वर्ष की आयु के बच्चों को व्यवस्थित तरीके से स्कूली शिक्षा से जोड़ने पर ज़ोर देती है, यह प्रारंभिक बाल्यावस्था देखभाल और शिक्षा एवं इसकी प्रक्रियाओं पर केंद्रित है। बच्चों, अभिभावकों, शिक्षकों के सामूहिक प्रयासों, स्कूली पाठ्यक्रम और सही शिक्षा प्रणाली तैयार करने से यह बदलाव जल्द लाया जा सकता है।

यदि बच्चे स्वयं जागरूक होंगे, तो वे बेहतर निर्णय लेने में सक्षम होंगे जिससे उनका जीवन सुचारु रूप से चलेगा। वे तुलनात्मक ढंग से अपनी क्षमताओं और कमज़ोरियों के आधार पर चुनौतियों का सामना करने

में सक्षम होंगे। विद्यालय के परिवेश में ऐसे अवसर प्रदान और सृजित करने की आवश्यकता है, जिससे वे स्वयं कार्य करके सीख सकें।

शोध अध्ययनों से पता चलता है कि ऑनलाइन शिक्षण की तुलना में ऑफलाइन शिक्षण में आई.सी.टी. का उपयोग अधिक प्रभावी है। लड़के और लड़कियाँ समान तरीके से दी गई स्थिति में प्रभावी ढंग से सीखते हैं। ऐसा इसलिए हो सकता है, क्योंकि शिक्षक प्रभावी ढंग से पढ़ाने के लिए ऑफलाइन कक्षा में ध्यान केंद्रित करने में सक्षम होते हैं और विद्यार्थी ज्ञान प्राप्त करने में सक्षम होते हैं। प्रशिक्षु शिक्षक भी क्रिया आधारित शिक्षण का समर्थन करते हैं।

बच्चों के सर्वांगीण विकास में माता-पिता और शिक्षकों की अहम भूमिका होती है। बच्चे अपने विचारों को व्यक्त करने और चर्चा करने के लिए बोली जाने वाली भाषा के माध्यम से ज्ञान, समझ और कौशल को अपनाते हैं। अपने लौकिक स्थानीय ज्ञान, संस्कृति और परंपरा को बनाए रखने के लिए विलुप्त हो रही भाषाओं को पुनर्जीवित करने की आवश्यकता है, जिसके लिए इन भाषाओं का निरंतर और स्वतंत्र प्रवाह आवश्यक है। यह बच्चों के बीच समस्या समाधान के व्यवहार को बढ़ाएगा। माध्यम की भाषा के आलोक में शिक्षक को बच्चों के सीखने के तरीकों को समझना चाहिए और स्वतंत्र अभिव्यक्ति के लिए कक्षा में विभिन्न भाषाओं के प्रवाह की अनुमति देनी चाहिए।

सीखने के लिए भाषा का ज्ञान बहुत जरूरी है, क्योंकि भाषा के माध्यम से व्यक्ति अपने विचार एवं भावनाएँ व्यक्त करता है। प्रभावी भाषा सीखना, शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया पर निर्भर करता है। शिक्षण को प्रभावी और रोचक बनाने के लिए शिक्षण-अधिगम में स्थानीय अनुभवों को जोड़ने के साथ-साथ बच्चों की भागीदारी भी महत्वपूर्ण है। इसी तरह कविता शिक्षण भी न केवल भाषायी कौशलों के विकास में सहायक है, अपितु स्वयं को रचनात्मक तरीके से अभिव्यक्त करने की क्षमता भी विकसित करता है।

गणित हमारी दिन-प्रतिदिन की गतिविधियों में शामिल है। कक्षा में गणितीय समझ और इसकी भाषा का विकास साथ-साथ चलता है। गणितीय भाषा वर्गीकृत शब्दों के साथ सटीक, संक्षिप्त एवं सशक्त होनी चाहिए। गणितीय विचारों को गणितीय भाषा में ही समझना चाहिए। भाषा की समझ के अभाव में किसी भी विषय की संकल्पना को समझना एक अत्यंत कठिन कार्य है।

शिक्षक, शिक्षा प्रणाली का केंद्र है। शिक्षक प्रशिक्षकों की व्यावसायिक शिक्षण अभिवृत्ति सकारात्मक होनी चाहिए, तभी उनके सीखने में सुधार संभव है। प्रस्तुत अंक में लेख इन्हीं मुद्दों पर शामिल किए गए हैं। 'विशेष' के अंतर्गत कक्षा 1 की नई पुस्तक *आनंदमय गणित* से परिचित करवाया गया है। आशा है कि यह अंक आपके लिए लाभदायक सिद्ध होगा। पत्रिका के संबंध में आपके विचार व सुझाव सादर आमंत्रित हैं।

अकादमिक संपादक